

भारतीय राष्ट्रीय महासभा के
५० वां अधिवेशन
फैजपूर, डिसेंबर १९३६ का
अहवाल

प्रकाशक :
प्रधान मंत्री
अखिल भारतीय महासभा समिति
अलाहाबाद

Printed at Lokashakti Press, 291 Shanwar, Poona 2. by S. R. Rajaguru

AND

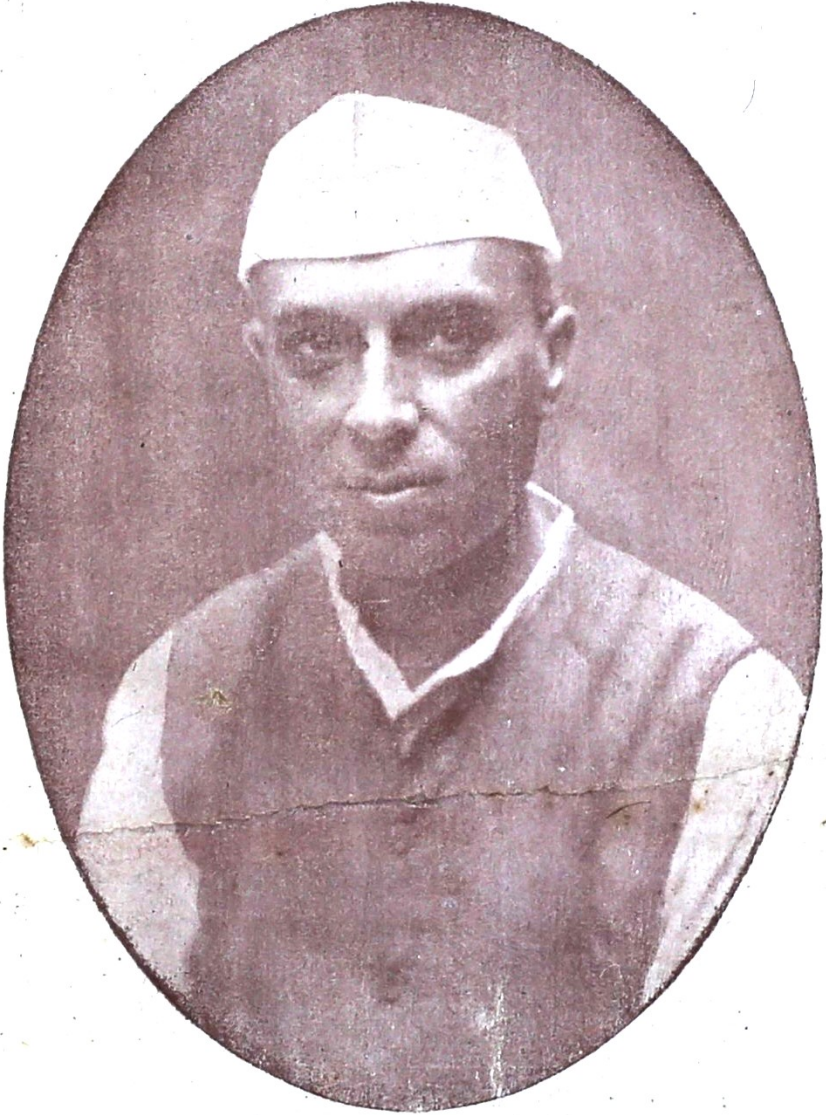
Published for All India Congress Committee, Allahabad,
by G. A. Deshpande, Secretary, Reception Committee
of the 50th Session of Indian National Congress,
at 373 Shanwar, Poona 2.

अनुक्रमणिका

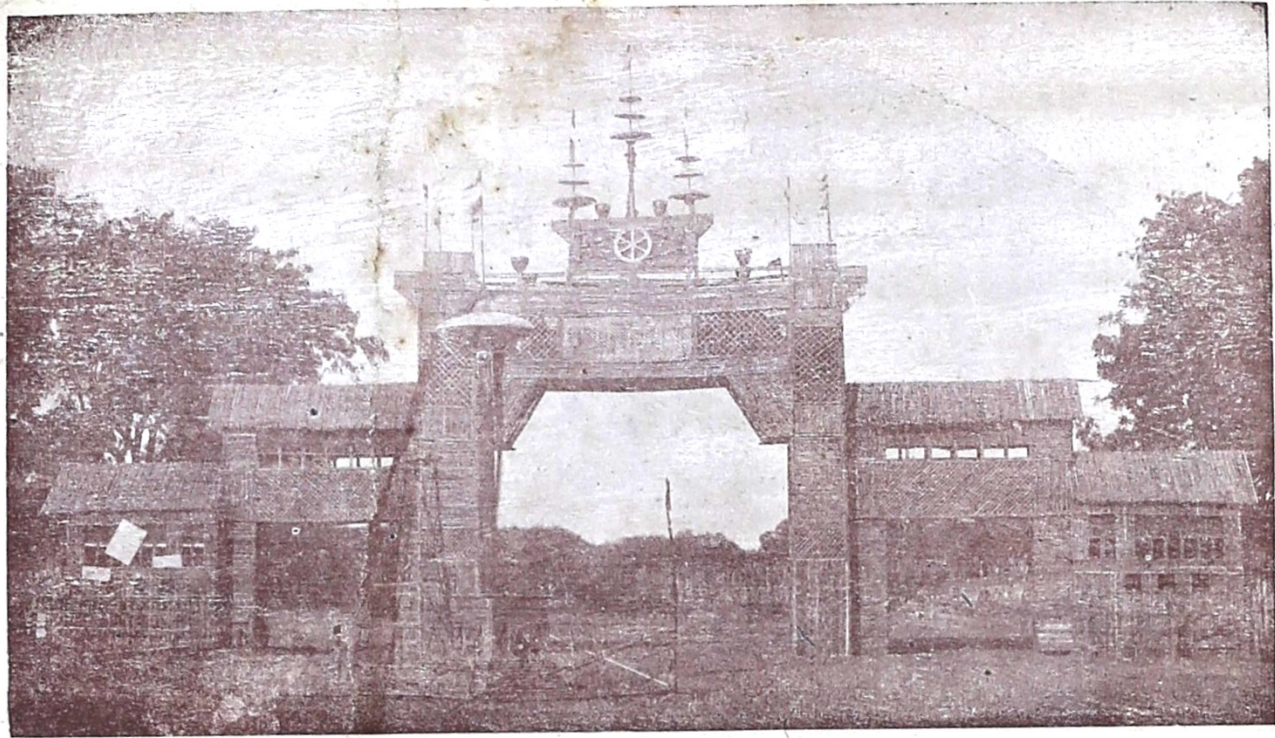
निवेदन	१
अधिवेशनका प्रथम-दिन	१०
स्वागताध्यक्षका अभिभाषण	१०
अध्यक्ष महोदयका अभिभाषण	२१
महात्माजीका निवेदन	३८
अधिवेशनका द्वितीय-दिन	४७
परिशिष्ट (Appendix)	
A स्वागतकारिणी सभा के अधिकारीवर्ग	i—ii
B आय-व्यय पत्रक	i—vi
C राष्ट्रपति पं. जवाहरलालजी का अध्यक्षीय अभिभाषण (अंग्रेजी)	i—xvi
D अधिवेशन में मंजूर हुवे प्रस्ताव (अंग्रेजी)	i—xii

(21/11/21) 10/11/21

फोटो का कागज जुन्नर में हाथ से बना हुआ है ।



राष्ट्राध्यक्ष



तिलक-नगरका प्रमुख " श्रीशिवाजी-महाद्वार. "

निवेदन

स्व. लोकमान्य तिलक के महाराष्ट्र में राष्ट्रीय महासभा का अधिवेशन हुए ४० वर्ष बीत गये थे। इससे प्रायः यह कहने में कोई हर्ज न हांगा, कि महाराष्ट्र के निवासियों को दो पुस्तों की महासभा के अधिवेशन का समारोह करने तथा देखने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। इसके लिये कारण भी कुछ ऐसे ही विशेष थे। सन १८८५ इ. की महासभा का प्रथम अधिवेशन सम्पन्न करने का अपूर्व गौरव पूने को यानी महाराष्ट्र को प्राप्त था, सही, लेकिन त्रिधिलिखित कुछ विपरीतही था। और इस लिये १८९५ इ. का महासभा का दशम अधिवेशन ही महाराष्ट्र में उसका प्रथम अधिवेशन हुआ। राजनीतिक क्षेत्र में सब तरह से अग्रसर रहे हुए महाराष्ट्र में इसके बाद दसपंच वर्ष के अन्दर ही फिरसे महासभा का अधिवेशन किया जाना बिल्कुल ही स्वाभाविक होता। लेकिन सन १९०८ में स्व. लोकमान्य तिलक को निर्वासन की सजा दी गयी और तबसे लेके उनके मण्डाले से लौट आनेतक की अवधि में महाराष्ट्र में जो दमन और उसकी प्रतिक्रिया का प्रभाव रहा, उसके कारण महाराष्ट्र में महासभा का अधिवेशन किया जाना प्रायः असम्भव हो गया। रिहाईसे लेके निधनतक की लोकमान्य तिलक की ५-६ वर्ष की अवधि महासभा की गिरी हुई गृहस्थी को संसार के पूर्ववत् शानदार करने ही में बीत गयी। इस लिये अपने घरपर उसको निमंत्रित करने के लिये उन्हें फुरसत ही नहीं मिली। सन १९२० में महात्मा गांधी ने असहयोग आन्दोलन की घोषणा की, उस समय खुद को स्व० लोकमान्य तिलक के अनुयायी कहलाने वाले कुछ नामधारी प्रमुख राजनीतिक नेताओं ने कांग्रेस विरोध की जिस नीति का अवलम्ब कर रखा था, उसके कारण तो यह प्रायः सम्भव ही नहीं था कि महाराष्ट्र की ओर से किया जानेवाला निमन्त्रण महासभा को स्वीकार होता। लेकिन धीरे धीरे इस परिस्थिति में भी परिवर्तन होने लगा। महाराष्ट्र के काँग्रेसनिष्ठ कार्यकर्ताओं की यह धारणा कि हम लोग अपनी इस काँग्रेसनिष्ठा में स्व० लोकमान्य तिलक की असली परम्परा ही का अवलम्ब कर रहे हैं, धीरे धीरे सफल होने लगी और सन १९३० तथा १९३२ के दोनों स्वातन्त्र्य संग्रामों में अन्य प्रान्तों के अनुसार महाराष्ट्र ने भी उत्साहपूर्वक कूदकर काफी कारगुजारी कर दिखाई। सविनय अवज्ञाम्दोलन स्थगित होनेपर बड़ी व्यवस्थापिका सभा का चुनाव हुआ उसमें भी महाराष्ट्र ने काँग्रेस की ओर से दोनों स्थान जीत लिये। इससे अन्य प्रान्तों का महाराष्ट्र की ओर देखने का दृष्टिकोण विरुद्ध हो गया और व इस बात को मानने तथा प्रगटरूप से कहने भी लगे, कि काँग्रेसनिष्ठा में अन्य प्रान्तों की अपेक्षा महाराष्ट्र भी किसी कदर कम नहीं हैं। खासकर सन १९३५ इ. में राष्ट्रीय महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष बाबू राजेन्द्र प्रसादजी ने समूचे भारत का जो देशव्यापी दौरा किया, उसमें उन्हें महाराष्ट्र में अपूर्व सफलता हासिल हुई। शहरों की तो क्या देहातोंतक की साधारण स्त्रीपुरुष जनता ने बड़ी शान के साथ उनका प्रेमपूर्वक स्वागत किया और उनके मुखारविन्द से महासभा का उत्साहजनक सन्देश सुनने के लिये क्या देहाती और क्या

शहराती हजारों श्रीपुरुष झकड़ा हो गये। इससे प्रसन्न हो के बाबू राजेन्द्रप्रसादजी ने समूचे भारतवर्ष को यह यकीन दिलाया, कि महाराष्ट्र का तो अब प्रायः कायाकल्प ही हो गया है। ऐसी दशा में अपने प्रान्त में राष्ट्रीय महासभा का महाधिवेशन सम्पन्न करने की जो उत्कण्ठा महाराष्ट्रीय काँग्रेस कार्यकर्त्ताओं के दिलों में प्रबल हो उठी थी उसे अतृप्त रखना दिनबिदिन असम्भव प्रतीत होने लगा था। गत तीन चार वर्षों से लगातार महाराष्ट्र की ओर से काँग्रेस का निमन्त्रण हो ही रहा था। इससे आखिर सन १९३५ के लखनऊ के अधिवेशन में महाराष्ट्र का निमन्त्रण प्रचण्ड बहुमत से स्वीकृत हुआ।

सन १९३४ ई० के स्वातन्त्र्य-संग्राम का परिणाम सन १९३१ की अपेक्षा कुछ अलग ही हुआ था। अब यह जरूरी हो गया था कि सविनय अवज्ञान्दोलन को स्थगित करके राष्ट्रीय संगठन के कार्य की फिरसे नयी योजना बनाकर उसे काम में लानेका आयोजन किया जाये। सन १९३० से लेके सन १९३४ तक लगातार चार वर्ष समूचे राष्ट्र ने जो महान् त्याग किया और जिन कष्टों का सामना किया था, वे यद्यपि सफल नहीं हुए, तो भी उनसे इतना लाभ तो अवश्य ही हुआ कि राष्ट्र की शक्ति का काफी अंदाजा लग गया। राष्ट्र के सम्मुख अब यह धात अनुभव से प्रामाणित हो गयी, कि स्वतन्त्रता संग्राम में सम्पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिये जिस शक्ति की जरूरत होती है, वह है बहुजन समाज की सुसंगठित शक्ति। अब राष्ट्र के सामने प्रमुख रूप से यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न पेश हुआ, कि इस प्रकार की सुसंगठित शक्ति किस तरह निर्माण की जाये। अतः अब सब को प्रतीत होने लगा, कि इस शक्ति को पैदा करने के लिये महासभा को चाहिये, कि वह सामान्य जनता के साथ रहा हुआ अपना सम्बन्ध अधिक धनिष्ठ करे। महासभा के बम्बई के अधिवेशन में महात्मा गांधी ने जनता के सम्मुख काँग्रेस का जो नया विधान तथा कार्य की रूपरेखा पेश की थी, उसका असली उद्देश भी यही था, कि महासभा का अधिवेशन देहातों में सम्पन्न करना सम्भव हो। क्यों कि इस प्रकार देहातों में देहातियों के ही बीचमें महासभा का महाधिवेशन सम्पन्न करने के अतिरिक्त ऐसा और कौनसा दूसरा साधन हो सकता है, जिससे काँग्रेस के कार्यक्रम तथा उद्देश्य का प्रचार समुचित रूपसे साधारण जनता में किया जा सके? लेकिन बम्बई के अधिवेशन में संयुक्त प्रान्त के निमन्त्रण का स्वीकार किया जा चुका था और संयुक्त प्रान्त के विशाल नगर लखनऊ में इस अधिवेशन को सम्पन्न करने का आयोजन भी किया गया था। लखनऊ के इस अधिवेशन में बहुजन समाज के साथ काँग्रेस का अधिक निकट सम्बन्ध प्रस्थापित करनेसम्बन्धी विचार की अधिक पुष्टी की गयी और उसे काफी चाल भी दी गयी, जिसके फल स्वरूप उक्त अधिवेशन में “जनसम्बन्ध” (मास कॉन्टैक्ट) प्रस्थापित करनेसम्बन्धी निम्नालिखित मर्म का महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव किया गया—

इसी अधिवेशन में आगामी अधिवेशन महाराष्ट्र में करनेसम्बन्धी महाराष्ट्र के निमन्त्रण का भी स्वीकार किया गया और अपनी परम्परागत साहसी मनोवृत्ति का पूरा परिचय देते हुए जनता के साथ का महासभा का सम्बन्ध अधिक निकट बनाने के बढिया साधन-स्वरूप इस अधिवेशन को देहात ही में सम्पन्न करके महाराष्ट्र ने काँग्रेस के इतिहास के एक नवीन युग में प्रथम पदार्पण करने का महान् गौरव हासिल किया। काँग्रेस का अधिवेशन देहात में

सम्पन्न करने की कल्पना न तो महात्मा गांधी के दिमाग का सहज ख्याली खन्त ही था और न महाराष्ट्र के कुछ काँग्रेसवादी नेताओं का अन्ध दुराग्रह ही। काँग्रेस के द्वारा गत पचास वर्षों से चलाये गये आन्दोलन और किये गये कार्य का वह परिपाक था। अतः गँती ता. २२ वी मई सन १९३६ को पूने में महाराष्ट्र प्रान्तीय काँग्रेस कमिटी की जो बैठक हुई, उसमें बहुमत से मर्मका प्रस्ताव किया गया, कि महाराष्ट्र में होनेवाला आगामी अधिवेशन देहात ही में किया जाये। इस प्रस्ताव के अनुसार अधिवेशन करनेका सौभाग्य खानदेश को प्राप्त हुआ। देहात में अधिवेशन करने की कल्पना बिल्कुल ही नयी थी और महाराष्ट्र बिल्कुल अननुभवी ! इससे कई लोगों ने यह अनुमान किया कि इस तरह का घोरतर साहस करने में महाराष्ट्रीय काँग्रेस कार्यकर्ता अपनी अनुमति न देंगे। लेकिन “ होनहार बिरवान के होत ऊजरे पात ” इस कव्युक्ति के अनुसार इस अभिनव कल्पना की पुष्टि करनेवाले कई लोग कमर कसके आगे बढ आये, और काफी चर्चा चलायी जानें के बाद यह तय पाया गया कि महाराष्ट्र में होनेवाला महासभा का महाधिवेशन देहात ही में हो। इस तरह का निश्चय होते ही अन्य लोगों की मनोवृत्ति में भी परिवर्तन हो गया और अब यह सोचा जाने लगा, कि किस उपाय से इस कल्पना को सफलतापूर्वक मूर्त स्वरूप दिया जाये ? इसका यह अर्थ नहीं, कि संशयात्मा तथा विरोधियों का अब नामोनिशानतक मिट गया था। वे तो थे, और काफी तापदाद में थे, लेकिन उनके उस विरोध की जड में भी महाराष्ट्र के उज्वल गौरव के सम्बन्ध की जागरुकता तथा अधिवेशन को सफल बनाने की तीव्रतर लगन ही पांथी जाती थी।

अधिवेशन देहात में और वह भी खानदेश के किसी देहात में करने का निश्चय तो हो गया। लेकिन इतने ही से तो स्थल निश्चय का कार्य खतम नहीं न होता। देहात ही सही लेकिन कौनसा देहात ? यह सवाल तो रह ही जाता है। इस मामले में भी काफी मतभेद पैदा हुए और अन्त में खानदेश जिले के यावल तहशील के अन्तर्गत फैजपूर नामक देहात में इस अधिवेशन को सम्पन्न करने का निश्चय पका हुआ। इस तरह देहात में काँग्रेस का अधिवेशन करने में प्रमुख उद्देश यह था, कि काँग्रेस की नीति तथा सिद्धान्त का प्रचार सामान्य जनता में किया जाये और देहाती जनता तथा कार्यकर्ताओं की कर्तृत्वशक्ति का विनियोग अधिवेशन को सम्पन्न करने में किया जाके उनके तथा काँग्रेस के बीच में घनिष्ठता तथा आत्मीयता के भाव जागृत किये जायें। इस दृष्टि से फैजपूर और उसके इर्दगिर्द का प्रदेश प्रमुख काँग्रेस कार्यकर्ताओं को सब तरह से अनुकूल प्रतीत हुआ। क्यों कि उक्त उद्देश को सफल बनाने के लिये आवश्यक देहाती कार्यकर्ताओं का सबसे बडा और प्रबल संघ इस प्रदेश में पहलें ही से मौजूद था। रेल्वे स्टेशन से (सावदा) फैजपूर लगभग ५-५॥ मील दूरीपर है। (आगामी अधिवेशन जिस गांवमें होने जा रहा है, वह रेल्वे स्टेशन से ११ मील दूरीपर है) काँग्रेस की नगररचना तथा प्रदर्शनी के लिये सब तरह से अनुकूल हलकी या ऊसर धरती फैजपूरके आसपास न मिल सकी, अधिवेशन के लिये काश्तकारी जमीन ही लेनी पडी और उसकी क्षतिपूर्ति के लिये किसानों तथा सरकार के पल्ले में लगभग ८०००/- रु. उडेलने पडे। फिर भी देहातों में अधिवेशन सम्पन्न करने में रहा हुआ उद्देश सफल होनेकी सम्भावना हो तो वह इसी प्रदेश में अधिकसे अधिक है, इस प्रकार की पक्की धारणा होने के कारण कार्यकर्ताओंने दिल में यह ठान लिया था कि

उक्त प्रतिकूल परिस्थिति के कारण जो बाधाएं पैदा होंगी उनसे पार पाने के लिये चाहे कितना ही जीतोड़ परिश्रम क्यों न करना पड़े, लेकिन अधिवेशन तो यहींपर सम्पन्न किया जायेगा।

इस देहाती अधिवेशन को सम्पन्न करने में स्थान तथा क्षेत्रनिर्णय के कार्यसे लेके अधिवेशन के प्रारम्भ की झण्डा फहराने की विधितक कई प्रकार की बाधाएँ खड़ी हुईं। लेकिन जितनी ही बाधाएँ उठीं उतने ही हाथ भी उनका निवारण करने के लिये आगे बढ़ आये। फैजपूर का काँग्रेस अधिवेशन एक अपूर्व घटना थी और उसे सफल बनाने की महाराष्ट्र ने ठान ली थी। इसी कारण से वर्धा से लेके बेलगांव तक के अखिल महाराष्ट्र में राजनीतिक तथा विधायक कार्य के क्षेत्र में काम करनेवाले काँग्रेसप्रेमी कार्यकर्ता सैकड़ों और हजारों की तायदाद में आगे आये और इन्हीं कार्यकर्ताओं की अचल निष्ठा तथा जबरदस्त कार्यकुशलता ही के कारण फैजपूर का काँग्रेस अधिवेशन सफल भी हुआ। इस में भी विशेष सन्तोष की बात तो यह थी, कि आदिसे लेके अन्ततक इनमें से किसी भी कार्यकर्ता ने छोटे बडेपन या उच्च नीचता का व्यक्तिगत अथवा कार्यगत भेदभाव कभी नहीं दिखाया। इनमें तो प्रायः एक क्रिस्म का भ्रातृभाव ही हुआ दिखाई देता था। इस लिये यद्यपि इन लोगों में कई बार मतभेद पैदा हुए और कभी कभी तीव्र विरोध भी दिखाई दिया, तो भी अन्तमें उक्त भ्रातृभाव ने इन सारी बाधाओं को मात कर दिया और अन्ततक सारा बेडा सुचारु रूपसे पार हो गया।

देहात में होनेवाला यह अधिवेशन यदि सफल हुआ तो उसका असर साधारण जनता पर होगा और उससे अपने हितसम्बन्धों को ठेस लगेगी, इस प्रकार का भय इस क्षेत्र में रहनेवाले जिन लोगों को मालूम होता था, उन्होंने जितना बन सका, जीतोड़ परिश्रम किया, कि काँग्रेस का अधिवेशन फैजपूर में न किया जा सके। इन लोगों कि यह धारणा थी, कि यदि इस प्रदेश की किसानजनता काँग्रेसवादी बन गयी, तो सरकारी क्षेत्र में रहा हुआ अपना सारा प्रभाव जाता रहेगा, इतना ही नहीं, वरन् साम्प्रदायिकता के नामपर साधारण किसान जनता के प्रतिनिधि के तौर पर जो कुछ भी अत्याधिक गौरव प्राप्त है वह भी नष्ट हो जायगा। अतः इसके उपाय के रूप में इन लोगों ने यही निश्चय कर लियासा दिखाई दिया कि हर किसी भी तरहसे क्यों न हो, फैजपूर में यह अधिवेशन होने ही न दिया जाये। अधिवेशन के लिये स्वागत समिति ने जो जमीन पसंद की थी, उसके सम्बन्ध में हरप्रकार के भलेबुरे उपायों को काम में लाकर मालिकों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे यह दबाव डालने की काफी कोशिश की गई, कि वे इस कार्य के लिये काँग्रेसवालों को शिकमी लगानपर भी अपनी जमीनें सौंप न दें। इस कार्य में स्थानीय सरकारी अफसरों ने भी उनकी काफी सहाय्यता की। लेकिन अपने वचनोंपर दृढ़ रहनेवाले कानूनकारों ने काँग्रेस का साथ नहीं छोड़ा और बहुत कष्ट सहनेपर भी उनमें से बहुतेरों ने एक बार काँग्रेस को सौंपी हुई अपनी जमीनें लौटा लेनेसे साफ इन्कार किया। शहरसे बहुत दूरीपर बसे हुए एकांतिक और दुर्गम स्थान पर काँग्रेस जैसा प्रचण्ड मेला लगाने जा रहा था और उसमें हजारों और लाखों तायदाद में भीड़ एकत्रित होने की भी पूरी सम्भावना थी। इससे आरोग्यरक्षा विभाग की भी जटिल समस्या उठ खड़ी हुई। इस मामले में भी आरोग्यरक्षा विभाग के सरकारी अफसरों ने पक्का निश्चय कर लिया था, कि यथा सम्भव सब प्रकारकी सावधानी रखने के लिये समिति को

बाध्य किया जाये। इस प्रबन्ध में पूरी तरहसे यह अनुभव किया गया की आरोग्यरक्षा के सम्बन्ध में सरकारी शासनविभाग की योजनायें प्रायः इतनी खर्चीली होती हैं, जो जनता की सहन-शक्ति के परे हों। सबसे अधिक महत्त्व की बातें थीं, पानी तथा पाखाने का इन्तजाम करना। इन मामलों में स्वागत समितियों ने एक ऐसी योजना बनाई थी, जो यथा सम्भव कम खर्चीली किन्तु देहाती लोगों के सामने एक अच्छा आदर्श रखनेवाली थी। इस कार्य की देखभाल करने के लिये सेवापरायण विशेष कार्यकर्ताओं को नियुक्त करने का भी स्वागत समितियों ने निश्चय कर लिया था। लेकिन शुरूसे ही काँग्रेस कार्यकर्ता तथा उनकी योजना को पर्याप्त तथा विश्वास योग्य मान लेना सरकारी अफसरों की शान के खिलाफ था। आखिर सरकारी अफसर, स्वागत समिति के प्रमुख तथा सावदा-फैजपूर के म्युनिसिपालिटी के अधिकारियों की दो संयुक्त बैठकें पुणे तथा बम्बई में की गयीं। इन बैठकों में प्रारम्भ ही से बम्बई सरकार के स्थानिक स्वराज्य विभाग के मन्त्रों सर अली मुहम्मदखां दहलवी का व्यवहार स्वागत समिति के प्रति सहानु-भूतिपूर्ण रहा जिससे अन्त में स्वागत समिति ने जिन कार्यकर्ताओं की नियुक्ति की थी, तथा जिस कार्यपद्धति का अवलम्ब करने की ठान ली थी, उसीके आधारपर सब के लिये सन्तोषजनक योजना बनायी गयी और अधिकृत रूपसे अधिवेशन के लिये मार्ग खुल गया। इस तरह यहां पर “दृढनिश्चय से आधे काम सफल हो जाते हैं” वाली कहावत चरितार्थ हो गयी। फैजपूर में काँग्रेस का अधिवेशन करने के सम्बन्ध में कार्यकर्ताओं का निश्चय बिल्कुल अटल था, इसी एक बातसे कई उलझनें आपसे आप सुलझ गयीं, और पहले जिन लोगों ने विरोध की आवाजें बुलन्द की थीं, उनका भी सहयोग धीरे धीरे प्राप्त होने लगा।

काँग्रेस का अधिवेशन करना एक जबरदस्त खर्चीला काम था और उसपर भी य अधिवेशन देहात में होने जा रहा था। ऐसी दशामें कुछ काँग्रेस कार्यकर्ताओं के दिल में यह व्यर्थही का भय ता समा गया, कि कार्यकर्ताओं में किसी को ऐसे कार्य का अनुभव नहीं है इससे इस देहाती अधिवेशन में रूपयों की बेहद बरबाद होगी और महाराष्ट्र में कुछ इनेगिने सम्पन्न व्यक्तियोंके होते हुए भी समूचा महाराष्ट्र सम्पन्न न होने के कारण इस व्यर्थ की हानि का असह्य बोझ निर्धन महाराष्ट्र के सिरपर पडके उसकी तो कमर ही टूट जायेगी जिससे उसके आगामी कार्यमें नाहककी बाधायें उठ खडी होंगी। अलबत्ता हमेशा की तरह इन लोगों में ऐसेही लोगों की अधिकता थी जिन्होंने देहातों में किये जानेवाले काँग्रेस अधिवेशन तथा उसके तौरतीरे के सम्बन्ध में विशेष विचार ही नहीं किया था। साथहि साथ जो लोग काँग्रेस का अधिवेशन देहात में करनेके पक्ष में थे तथा जिन्होंने इस मामले में काफी विचार भी किया था, उनके पास भी ऐसी कोई युक्ति नहीं थी, कि जिसके आधारपर वे इन सन्देहकारी लोगों का समाधान कर सकें। ऐसी दशा में शुरूसे ही सारे कार्यकर्ता अधिवेशन के लिये आवश्यक धनकी चिन्ता में डूबते उतरते रहे थे। लेकिन इस मामले में भी “हिम्मते मर्दा, मदद दे खुदा” वाली कहावत चरितार्थ होके आकस्मिक रूपसे सारी चिन्ताएं दूर हो गयीं। स्वागत समिति के पदाधिकारियों का चुनाव करने के लिये उसकी पहली बैठक फैजपूरमें की गयी। इस बैठक में देहात में होनेवाले अधिवेशन के कारण अधिक व्यय होनेकी सम्भावना के सम्बन्ध में सद्देहपूर्वक हरतरह की दलीलें पेश होनेके कारण जब मय तथा चिन्ता प्रकट

की जाने लगी, तब तो सभा में मानों चिन्ताके बादल ही छा गये । ऐसी निराशाजनक परिस्थिति में यावल निवासी दानवीर सज्जन श्रीयुत माधवरावजी देशपांडे एकाएक उठ खड़े हुए और उन्होंने घोषित कर दिया, कि कांग्रेस अधिवेशन के खर्च के लिये २० हजार रुपया वे प्रदान करेंगे । देहात में होनेवाला कांग्रेस अधिवेशन गरीबों की भलाई कर उन्हें लाभ पहुंचायेगा और जिस खानदेश में अपने बापदादाओं ने लाखों की संपत्ति प्राप्त की है उसी प्रदेश में जब कि कांग्रेस का अधिवेशन होने जा रहा है, तब उसे सफल बनाने के लिये जहांतक बन सके सहाय्यता करना अपना धर्म है, इसी तरह की धार्मिक तथा सात्त्विक भावना से प्रेरित होके श्रीमान माधवरावजी ने उक्त घोषणा की थी, इसबात का काफी प्रमाण उनकी इस सम्बन्ध की आगामी कृतियों से पाया जा सकता है । जैसे कठिन अवसरपर अित तरह २० हजार का दान मिल सका । और कांग्रेस के खर्च को चलाने के लिये उन्होंने यह रकम पेशगी ही दे डाली । श्रीमान माधवरावजी की इस घोषणा के कारण सभा में कुछ समय के लिये तो सात्त्विक रोमहर्षण वातावरण पैदा हो गया । सब कार्यकर्ताओं की छातीपरसे पहाड का सा जबरदस्त बोझ हट गया और उनका उत्साह शतगुणित हुआ । अमलनेर निवासी दान वीर श्रीमान प्रतापशेठ ने भी सहर्ष स्वीकार किया, कि अधिवेशन के लिये आवश्यक पानी का प्रबन्ध करने के लिये जो कुछ भी व्यय होगा उसका भार वे खुद उठावेंगे । उनकी इस घोषणा से स्वागत समिति के कार्यकर्ताओं को अपने कार्य संचालन में बहुत ही उत्तेजना मिली । देहात में होनेवाला कांग्रेस अधिवेशन एक अपूर्व और अनूठा प्रयोग है, इस भावना से प्रेरित होके केवल खानदेश ही के नहीं वरं समूचे महाराष्ट्र एवं बम्बई निवासी दानवीर सज्जनोंने भी स्वागत समिति को मुक्त हस्त से सहायता दी । लगभग इसी समय समूचे प्रान्त को व्यवस्थापिका के चुनावसम्बन्धी व्यय का बोझ भी उठाना था ताहम भी स्वागत समिति के खजाने में ४२२२१ रु. एकत्रित हो गये । यह बात दर असल महाराष्ट्र के मान तथा गौरव को बढ़ानेवाली है ।

अधिवेशन के लिये स्थान प्राप्त हुआ, धन एकत्र होने लगा और अन्य कठिनाइयां भी धीरे धीरे हट चली । तब सवाल पेश हुआ, कांग्रेसनगर तथा प्रदर्शनी की रचना और उसके लिये आवश्यक साधनसामग्री तथा कुशल कारीगरों का । महाराष्ट्र में लगभग ४० वर्ष बाद कांग्रेस का आगमन हो रहा था । ऐसी दशा में उसके लिये बसाये जानेवाले नगर को स्व. लोकमान्य तिलक के अतिरिक्त और किसका नाम दिया जा सकता ? जब कि कांग्रेस देहात में हो रही थी तब कोई आश्चर्य नहीं, कि उसकी रचना आदिका कार्य करने के लिये ऐसेही लोग दौड पडे हों, जिन्हें देहाती जनता के सम्बन्ध में प्रेम हो । यह कहने में कोई आपत्ति नहीं, कि यदि महाराष्ट्र चरखा संघ के एक प्रमुख कार्यकर्ता श्री. रामदासभाई गुलाटी तथा शान्तिनिकेतन के सुविख्यात कलाकार श्री. नन्दलाल बोस का सहयोग फैजपूर कांग्रेस की स्वागत समिति को प्राप्त न होता, तो तिलकनगर की इतनी सुन्दरतापूर्ण रचना करना सर्वथा असम्भव हो जाता । जिस निरलसतापूर्वक श्री. रामदासभाई गुलाटी ने अपना कार्य कर दिखवाया वह अनुपमेय है । और श्री. नन्दलाल बोस के बारे में तो हम क्या लिखें ? जिन जिन लोगों ने तिलकनगर, प्रदर्शनी तथा स्थान स्थान पर बनाये गये महाद्वार फैजपूर में देखे, उन सब ने एक स्वर से श्री नन्दलाल बोस की कलाकारी की प्रशंसा ही की है । श्री. नन्दलाल बोसने

जङ्गल में मंडगल और सादगी से सौन्दर्य निर्माण कर दिखलाया। जङ्गलों में प्राप्त होनेवाली वह्नियां और बांस यही दो चीजें थीं। नन्दलाल बोस की साधन सम्यक्ति थी। किंतु इन्हीं मामूली जङ्गली चीजों में उनकी कलामयी दृष्टि को अनुपम सौन्दर्य की झलक दिखाई दी और रातदिन अथक परिश्रम करके उन्होंने ने अव्यक्त भावना को व्यक्त स्वरूप प्रदान किया। फैजपूर कांग्रेस के लिये श्री नन्दलाल बोस महात्माजी का एक अपूर्व पुरस्कार था। बम्बई निवासी सुविख्यात राष्ट्रीय मनोवृत्तिवाले स्थापत्यशास्त्री श्री. म्हात्रेजीने भी तिलकनगर के प्लेन बनाने तथा समय समयपर उचित सलाह देने में अमूल्य सहायता दी। इसी प्रकार पूना म्युनिसिपैलिटी के चीफ ऑफिसर श्री. शंकररावजी भागवत ने समय समयपर जो सहायता की उसका भी उल्लेख करना जरूरी है। देहात में किये जानेवाले कांग्रेस अधिवेशन का उद्देश था ग्रामीण जनता को शिक्षा देना। इस लिये शुरु से ही यह दृष्टि रख गयी थी, कि कांग्रेस की नगररचना, उसकी सजावट, सुन्दरता, पानी का प्रबन्ध, मलविसर्जन का इन्तजाम आदि सारी बातें देहातियों के ग्रामीण जीवन के लिये मार्गदर्शक हों। देहाती कांग्रेस देहात में क्या है इसे दिखाने के लिये नहीं, वरं वहां क्या होना चाहिये यह दिखाने के लिये की जा रही थी। साथही साथ इस में इस बात का भी पूरा आग्रह रखा गया था, कि नगररचना तथा तदनुषंगिक अन्य कार्यों के लिये आवश्यक सब सामान देहातों ही में बने हुए हों। इस आग्रह के दो उद्देश थे। एक तो यह कि इन सामानों के लिये खर्च होनेवाला सारा धन जहांतक बन सके देहातों में रहनेवाली गरीब प्रजा ही को प्राप्त हो। लेकिन इससे भी अधिक महत्त्व का दूसरा उद्देश यह था, कि इन सामानों को तैयार करा लेनेके निमित्त से कांग्रेस के कार्यकर्ता तथा साधारण जनता के बीच धनिष्ठता का सम्बन्ध प्रस्थापित हो जाये और आसपास बसे हुए देहातों के हरएक झोपड़े में रातदिन कांग्रेस की ही चर्चा चलाई जाये। अतः रचना के सम्बन्ध में सौंदर्य की दृष्टि होते हुए भी सादगी का आग्रह पाया गया; जिसके परिणाम में अन्त में यही बात प्रमाणित हुई कि सादगी और सुन्दरता एकही वस्तु के दो पहलू हैं। इसी उद्देश को सामने रखते हुए जहांतक हो सका कांग्रेस अधिवेशन में ग्रामोद्योग की ही सारी वस्तुओं को काम में लाने की कोशिश की गयी थी। यह कहने में भी कोई आपत्ति नहीं, की फैजपूर कांग्रेस ही ऐसी पहली कांग्रेस थी, जिसमें हाथसे कूटे हुए चावल, देहाती कोल्हूसे निकाला हुआ तेल, और हाथ पिसाई का आटा आदि ग्रामोद्योग की वस्तुएं इस्तेमाल की गयी थी। अधिवेशन के खर्च में भी काफी मितव्ययिता की दृष्टि रखी गयी थी। कांग्रेस अधिवेशनों के आयव्यय के लेखों की तुलना करने पर यह बात स्पष्ट दिखाई देगी, की अन्य अधिवेशनों कि अपेक्षा फैजपूर का अधिवेशन बहुत मितव्ययितापूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रायः सभी विभागों के प्रमुखोंने अपने अपने विभाग के प्रबन्ध में यह कोशिश की थी कि तरखमीने में दिखाई हुई रकम की अपेक्षा प्रत्यक्ष रूप में खर्च कम हो। इसी तरह अधिवेशन खतम होने के बाद भी बचे हुए सामानों को फरोक्त करते समय कार्यकर्ताओं ने उतनी दक्षता तथा उत्साह से काम लिया जितना कि वह शुरुसे रखते चले आये थे। यही कारण है, कि आर्थिक दृष्टिसे अधिवेशन सफल होनेपर भी अधिवेशन के लिये एकत्र हुई रकम में से चालिस हजार से अधिक रकम भी बचत हुई।

फैजपूर कांग्रेस महाराष्ट्रीय कांग्रेस कार्यकर्ताओं में रही हुई तत्त्वनिष्ठा की एक प्रकार

से कसौटी ही थी। अधिवेशन के लिये प्रातः स्थान तो खेती के काम में लायी जानेवाली जमीन थी। इसलिये नैसर्गिक रूपसे ही उसमें कई किस्म के दोष थे। मानवी प्रयत्नों के लिये जहांतक सम्भव था, वहांतक इन दोषों को दूर करने की कोशिश की गयी; लेकिन वर्षा की दैवी आपत्ती को दूर करना तो किसी तरह सम्भव ही नहीं था। इस आपत्ति ने अपना असर इतना जमा रखा था, की अधिवेशन की अवधि में आकाश में बादल का एक जरासा कतरा दिखाई देते ही कांग्रेस के कार्य के लिये एकत्र हुए कार्यकर्ताओं के हृदयों में निराशा तथा निरुत्साह की घनघोर छटा छा जाती थी। इस वर्ष मेघराज ने भी कमाल कर खूब कसके कांग्रेस कार्यकर्ताओं की सत्वपरिक्षा की। इस साल इस प्रदेश में इतनी वृष्टि हुई, जो गत कई वर्षों में नहीं हुई थी। नवम्बर महीने में १० इंच वर्षा होना कभी किसी ने सुनातक न था। पर फैजपुर के सम्बन्ध में तो कई बार अनसुनी बात ही सुनी पड़ती थी। ऐसी दशा में पर्जन्यवृष्टि ही अपवादात्मक क्योंकि होती। जहांपर तिलकनगर की रचना तथा अधिवेशन का पण्डाल बनाया जानेवाला था, वहां तो चूं ओर पानी ही पानी दिखाई दे रहा था। खानदेश की काली धरती घुटने बराबर किचड में खींचे बगैर किसी को एक फदम भी उठाने नहीं देती थी। सब लोगों के हृदय हिलसे गये। निश्चय डांवाडोल होने लगा। वर्षाने जहांतहां जो बरबादी कर रखी थी, उससे कार्यकर्ताओं के मन में उदासी और उद्विग्नता के छाले पड़ गये। नैराश्य का अंधकार चूं ओर फैल गया। दैववादी दौर्बल्य की स्याही कार्यकर्ताओं के उत्साहपूर्ण उज्वल हृदयों पर पुत गयी। लेकिन यह सब कुछ केवल कुछही समय के लिये। केवल एकही रात। नवम्बर की २० वी तारीख के सूर्योदय ने सारे तिमिरपटल को न जाने कहां का कहां भगा दिया। उस समय कांग्रेस कार्यकर्ताओं में रही हुई निष्ठा तथा निर्धार फिरसे जाग्रत हो उठे और वे इस निश्चय से फिर कार्य में दत्तचित्त हो गये कि चाहे जो हो, महाराष्ट्र का यह कांग्रेस अधिवेशन फैजपुर में होके ही रहेगा। बोल बोलते तिलक नगर निर्माण हुआ। महाद्वार भी बन गये। महात्मा गांधी का आगमन हुआ। राष्ट्रपति पण्डित जवाहरलाल नेहरू भी पधारे। एकके बाद एक राष्ट्रीय सन्त महन्त फैजपुर में एकत्र होने लगे और पंढरपुर में भाविक भक्तों की जिस तरह भीड़ लगती है उसी तरह भारतवर्ष के कोनेकोने से राष्ट्रवादी लोगों की भीड़ फैजपुर की ओर एकत्र होने लगी। फैजपुर कांग्रेस में लोगों का खासा जमघट जमा था। उस जनतारुपी जनार्दन के दर्शन से सबको सुख और हर्ष हुआ। जनतारुपी जनार्दनका प्रेम देहात में कांग्रेस का अधिवेशन करने की कल्पना के जन्मदाता महात्मा गांधी को भी फैजपुर में अधिवेशन के व्यासपीठ पर खींच लाया। इस अवसरपर महात्मा गांधीने भारतीय जनता को फिरसे स्वराज्य का दिव्य सन्देश कह सुनाया। अधिवेशन की हंसी उड़ाने के लिये जो लोग आये थे, वे उसकी प्रशंसा करते हुए लौटे। इस अधिवेशन की सफलता पर स्वयं राष्ट्रधिपतितक सन्तुष्ट हुए और उन्होंने आमतौरपर यह जाहिर कर दिया, कि अधिवेशन ने उनका मत परिवर्तन कर डाला है। देहात में कांग्रेस का अधिवेशन करने की जो कल्पना कल्पनासृष्टि में ही वास कारती थी, वह अब एक प्रत्यक्ष वस्तु बन गई और इससे कांग्रेस के इतिहास में एक नये युग का प्रभात काल शुरु हो गया। फैजपुर का रूपान्तर जैसी कि कुछ विघ्नसंतोषी लोगों की धारणा थी, फजीहतपुर के रूप में न होके फेतहपुर के रूप में हुआ और इस तरह महात्माजी की कल्पना को प्रत्यक्ष सृष्टि में सफल स्वरूप प्राप्त हुआ।

कांग्रेस के अबतक के सारे अधिवेशन शहरों ही में संपन्न हुये थे। इससे उसके लिये आवश्यक सामान और मनुष्यों को वहांतक पहुंचाने तथा कांग्रेस में बोले जानेवाले हजारों लाखों शब्दों को केवल भारतही के नहीं वरं संसार के कोने कोने में पहुंचा देने के आमदरफ्तके कार्यों में रेल्वे, डाक तथा तार के महकमों को अबतक बंहुतही सुगमता हासिल होती थी। क्यों कि बड़े बड़े शहरों के रेल्वे स्टेशन तथा डाक और तारघर भी स्वाभाविक रूप से ही बड़े होते हैं। लेकिन सावदा स्टेशन तथा फैजपूर के डाक व तारघर तो देहाती ही थे। ऐसी परिस्थिति में अल्पावधि में कांग्रेस का कार्य सुचारुरूपसे सफल बनाने के लिये रेल्वे कम्पनी तथा डाक और तार के महकमों को काफी परिश्रम और व्यय करना पडा, जिसे उन्होंने सहर्ष करना स्वीकार भी किया। यह तो सच है, कि ऐसा करने में उन्होंने ने व्यापारी दृष्टी रखी थी, लेकिन साथही साथ यह भी स्वीकार करना पडेगा कि इस व्यापारी दृष्टि में सहानुभूतिकी भावना भी मिली हुई थी। रेल्वे कम्पनी तथा डाक और तार विभाग के अफसरों ने शुरूसे ही स्वागत समिती के साथ मित्रता तथा सहानुभूति का व्यवहार किया और फैजपूर का कांग्रेस अधिवेशन सफल बनाने में काफी सहायता पहुंचायी। इस कार्य के लिये रेल्वे, डाक तथा तार विभाग में काम करनेवाले कुछ कर्मचारियों को फैजपूर जैसे दुर्गम स्थान-पर कई दिनोंतक निवास कर देहातों में होनेवाली हरतरह की तकलीफें सहनी पडीं। लेकिन ऐसी कठिण परिस्थिति में भी उन्होंने ने जिस सन्तोष, शीघ्रता, तथा तत्परता के साथ अपना कार्य किया उसके लिये उन्हें धन्यवाद देना सर्वथा उचित होगा।

महाराष्ट्रीय कांग्रेस कार्यकर्ता इस बात को भली भांति जानते हैं कि फैजपूर कांग्रेस अधिवेशन के प्रबन्ध में कई किस्म की खामियां रह गई थीं। इस अधिवेशन की कल्पना बिल्कूल नथी थी और मनुष्यों में प्रायः रूढ मार्ग को छोडकर इधर उधर न जाने की प्रवृत्ति पायी जाती है। इसीसे अधिवेशन के मार्ग में उपर्युक्त कई किस्मकी बाधाये उठ खडी हुईं। इस अधिवेशन को सम्पन्न करने का उत्तरदायित्व जिनके कन्धोंपर पडा था, उनमें रही हुई कुछ व्यक्तिगत कमजोरियों ने भी इसमें कुछ योग दिया जिससे कल्पनासृष्टि में रहे हुए अधिवेशनसम्बन्धी सुन्दर चित्र का सही सही अडकन, वे फैजपूर की पवित्र भूमि में न कर सके। लेकिन उनके उद्देश की पवित्रता की ओर ध्यान देकर आलासे लेकर अदनातक के उनके सारे सहयोगी कार्यकर्ताओं ने तथा अन्य प्रान्तों से पधारे हुए मेहमानों ने भी उनके इन दोषों को ढंक लिया और जो कुछ भी अच्छापन पाया उसीको दृष्टिगत किया। मनुष्य प्रमादशील तो है ही, लेकिन अनुभव से शिक्षा प्राप्त करना यही उसमें रही हुई एक विशेषता है। इस दृष्टिसे यदि देखा जाय तो फैजपूर कांग्रेस के इस अधिवेशन में महाराष्ट्रीय कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने काफी नसीहत पायी है।

कांग्रेस का अधिवेशन देहात में भरने का प्रधान उद्देश कांग्रेस तथा जनता के बीच प्रेम तथा घनिष्ठता का सम्बन्ध प्रस्थापित करके भारतीय जनता को सुसंगठित, शक्तिमान तथा स्वाधीन बनाना ही रहा था। इस दृष्टिसे भावी इतिहास निरसंदेह अपने पन्नों में यह राय दर्ज किये बिना न रहेगा, कि उक्त उद्देश को सफल बनाने की दिशा में फैजपूर कांग्रेस ने प्रथम पदार्पण किया है। महाराष्ट्रीय कांग्रेस कार्यकर्ताओं के लिये भी इससे बढकर अधिक सन्तोष देनेवाली बात और क्या हो सकती है ?

पूना, २७ जून १९३७ }

शंकरराव देव,
स्वागताध्यक्ष.